# बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

## वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

**MAITHLI** **मैथिली**

**Set-I**

## MODEL PAPER SET - I

### मैथिली (50 अंक)

### परीक्षार्थीक लेल निर्देश -

परीक्षार्थी यथासम्भव अपनहि शब्दमे उत्तर देथि ।
उपरान्तक अंक पूर्णांक द्योतक थिक ।
परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्नक संग प्रश्न-संख्या अवश्य लिखथि ।

**समय : 1 घण्टा + 37½ मिनट** **पूर्णांक : 50**

1. निम्न बहुवैकल्पिक उत्तरमे सही लिखू : 10 x 1 = 10

i) आरसी प्रसाद सिंह विरचित अछि :
क) युगचक्र ख) विलाप
ग) अधिकार घ) मुसरी झा ।

ii) 'प्रतिवादक स्वर'क रचयिता छथि :
क) गोविन्ददास ख) रामकृष्ण झा 'किसुन'
ग) चन्द्रभानु सिंह घ) फजलुर रहमान हाशमी ।

iii) 'हथटुट्टा कुर्सी'क रचनाकार छथि :
क) हरिमोहन झा ख) प्रेम शंकर सिंह
ग) ललित घ) सुधांशु 'शेखर' चौधरी ।

iv) 'नटराज' कविता किनका द्वारा रचित अछि ?
क) विद्यापति ख) यात्री
ग) राजकमल चौधरी घ) चन्दा झा ।

v) 'थर्मसक चाह' किनकर रचना अछि ?
क) फजलुर रहमान हाशमी ख) हर्षनाथ झा
ग) आरसी प्रसाद सिंह घ) प्रो॰ वीरेन्द्र झा ।

vi) चन्द्र भानु सिंहक कविताक शीर्षक अछि :

क) हेमन्त गीत ख) कोइली

ग) विलाप घ) राम-वन्दना ।

vii) 'मिथिलाभाषा रामायण'क रचयिता छथि :

क) चन्दा झा ख) गोविन्ददास

ग) चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' घ) विद्यापति ।

viii) 'रमजानी'क रचनाकार छथि :

क) म॰ म॰ मुरलीधर झा ख) सुधांशु 'शेखर' चौधरी

ग) ललित घ) राम नरेश सिंह ।

ix) 'मैथिलीक आवश्यकता'क लेखक छथि :

क) म॰ म॰ परमेश्वर झा ख) हरिमोहन झा

ग) ललित घ) म॰ म॰ मुरलीधर झा ।

x) 'म॰ म॰ बाल कृष्ण मिश्र' रचना छनि :

क) राजकमल चौधरी ख) चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

ग) प्रेम शंकर सिंह घ) रमानाथ झा ।

2. निम्नमे कोनो **एक** विषय पर निबन्ध लिखू : 10

क) देशक वर्तमान राष्ट्रपति ख) बिहारक दशा-दिशा

ग) मिथिलाक पाबनि घ) बेरोजगारीक समस्या ।

3. निम्नमे कोनो **दू** प्रश्नक उत्तर दिअ : 2 x 5 = 10

क) निम्न लोकोक्ति / मोहबराकेँ वाक्यमे प्रयोग कए अर्थ स्पष्ट करू :

चोर-चोर मसिऔत भाए, उनटे चोर कोतवालकेँ डाँटए, तीन तिरहुतिया तेरह पाक, ऊँटक मुँहमे जीरक फोड़न, कनही गायक भिन्ने बथान ।

ख) निम्नक एक-एकटा पर्यायवाची शब्द लिखू :

समुद्र, वस्त्र, स्त्री, आकाश, घोड़ा ।

ग) निम्न वाक्यकेँ शुद्ध करू :

राम टेकटारि गाम आएल छलीह । ऋन लेब ठीक नहि । वाल्मीकि रामायन लिखने छथि । रमन प्रानहुसँ बढ़ि कए अछि । चन्द्रमाकेँ ससी सेहो कहल जाइछ ।

4. निम्न उद्धरणक आशय लिखू :
5

“गंगा थिकथि कलिक अध-हारिणि
घोर पाप परसहिँ दुरि जाए,
पातक विषम नष्ट हो सत्वर
जहिना जल-बिच नोन बिलाए ।”

**अथवा**

“भगीरथ बाबा स्वयं मट्ठा पीबि बेटा सभकेँ छाल्ही पर पोसने रहथि । सैह सपूत सभ आब मोछक पम्ह चलला पर बूढ़ाकेँ जरद्गव कहए लगलथिन्ह ।”

5. निम्न प्रश्नक उत्तर दिअ : 2 x 7½ = 15

क) ‘राम-वंदना’ शीर्षक आधारपर रामक महिमाक बखान करू ।

**अथवा**

‘विलाप’ शीर्षक कविताक मूल स्वरसँ अवगत कराउ ।

ख) ‘रमजानी’क कथावस्तु लिखू ।

**अथवा**

‘बाबाक संस्कार’क सारांश लिखू ।

**<u>उत्तरमाला</u>**

1. i) ग), ii) ख), iii) घ), iv) क), v) क), vi) ख), vii) क), viii) ग), ix) क),
x) घ)

2. **मिथिलाक पाबनि** - भारतक सभ्यता ओ संस्कृतिक अनुकूल एहि देशमे अनेक प्रकारक पाबनि मनाओल जाएत अछि । राष्ट्रीय पाबनि, जेना-स्वतंत्रता दिवस, गाँधी जयंती आदि ; सामाजिक पर्व-होली, ईद आदि । सांस्कृतिक अथवा आध्यात्मिक पाबनि दुर्गापूजा, रामनवमी, कृष्णाष्टमी इत्यादि, परन्तु मिथिलाक संस्कृतिक अनुकूल एहि ठाम प्रायः प्रत्येक मासमे कोनो-न-कोनो पाबनि पड़िते अछि । एतुका मुख्य पाबनि अछि-फगुआ, जूड़शीतल, रामनवमी, गंगादशहरा, पंचमी, मधुश्रावणी, अनन्त चतुर्दशी, चौठचन्द्र, दुर्गापूजा, कोजागरा, दियाबाती, भरदूतिया, छठि, सामा चकेवा, कार्तिक स्नान, नवान्न, तिलासंक्रांति इत्यादि । पाबनि सभक अपन अलग-अलग महत्त्व होएत छैक ; लोक सभ प्रत्येक पाबनि अपन सामाजिक सांस्कृतिक रूपें मनबैत छथि ।

किछु पाबनि एहेन अछि जे मिथिले मात्र मे मनाओल जाएत अछि, जेना- पंचमी, मधुश्रावणी, कोजागरा इत्यादि । ई पाबनि सभ मिथिलाक सांस्कृतिक विशेषता थिक । किछु पाबनि मिथिलाक संग-संग राज्य एवं देशक अन्य क्षेत्रहु मे अलग ढंग सँ मनाओल जाइत अछि । जेना- जूड़शीतल जे चैत्र संक्रांति कें मिथिला मे मनाओल जाएत अछि । ई पाबनि मिथिला मे रब्बी फसलक कटनी एवं तैआरीक समय मे होएत अछि । मिथिलाक तिलासंक्रांति कतहु 'चूड़ा-दहीक पाबनि' नामसँ प्रसिद्ध अछि । सभसँ महत्त्वपूर्ण मधुश्रावणी, जे मिथिलेटा मे होएत अछि । ई पाबनि मिथिलाक नवविवाहित ललनाक सोहाग (सौभाग्यवती रहब) सँ सम्बद्ध अछि । कार्तिक सँ आषाढ़ मास धरि मिथिलाक जाहि ललनाक पाणिग्रहण संस्कार होएत छन्हि ओ सभ श्रावण मासक कृष्ण पंचमी सँ शुक्ल तृतीया तक लगभग तेरह दिन नाग-नागिन कें पूजा करैत छथि । पूजाक एहि अवधि मे सासुरे सँ आएल अन्न आदि भोजन-सामग्री ग्रहण करैत छथि । नियम-निष्ठा सँ रहि पूजाकऽ शिव-पार्वतीक कथा सुनैत छथि । अन्तिम दिन नवविवाहित ललनाकें हाथ, ठेहुन एवं पैर पर टेमी देल जाएत छन्हि ।

कोजागरा नवविवाहित वर-पक्षक घर पर मनाओल जाएत अछि । कोजागरा दिन वरक सासुर सँ आएल पान-मखान सम्पूर्ण समाज मे वितरित कएल जाएत अछि । ई पाबनि शरद ऋतुक पूर्णिमा (आश्विन पूर्णिमा) दिन मनाओल जाएत अछि । एहि दिन 'पचीसी' खेलबाक परम्परा अछि ।

ओहिना मिथिलाक भाइ-बहिनक प्रेमक प्रतीक पाबनि सामा-चकेवाक महत्त्व विशिष्ट अछि । कार्तिक शुक्ल पक्ष मे छठिक खरना अथवा पारणा दिन सँ पूर्णिमा धरि घर-घर मे सामा-चकेवाक गीत

गाओल जाइत अछि, जाहि मे बहिन अपन भाइक उन्नति एवं समृद्धिक कामना करैत छथिन । कार्तिक पूर्णिमाक रात्रि मे भाइ द्वारा तोड़ल गेल सामा-चकेवा कें विसर्जित कएल जाएत अछि ।

एहि प्रकारें देखैत छी जे मिथिला मे अनेकानेक प्रकारक पाबनि अत्यन्त उत्साहपूर्वक मनाओल जाएत अछि ; मिथिला थिको उत्सवधर्मी भूभाग ।

3. क) **चोर-चोर मसिऔत भाए** – तौं जे हुनक पक्ष लैत रहुन, से ओहिना नहि ; ओहि प्रपंचमे तोरो हाथ छह । ठीके 'चोर-चोर मसिऔत भाए' कहल गेल छैक ।

**उनटे चोर कोतवालकें डाँटए** – ओ अहाँक मोटर साइकिलमे धक्का मारि उनटे अहींसँ मारि करबाक लेल उतारु भए गेल । एहने ठाम 'उनटे चोर कोतवालकें डाँटए' कहबी चरितार्थ होइछ ।

**तीन तिरहुतिया तेरह पाक** – हुनका आङनक ताले बेताल छनि ; घरसँ बाहर धरि भिन्न-भिन्न विचार आ व्यवस्था । एहने ठाम 'तीन तिरहुतिया तेरह पाक' कहल जाइछ ।

**ऊँटक मुँहमे जीरक फोड़न** – दू गोटेक भोजन असगरे खएनिहारकें चारि टा सोहारीसँ की हेतनि ? एहने स्थितिमे ने 'ऊँटक मुँहमे जीरक फोड़न' कहबी प्रसिद्ध भेल हेतैक ।

**कनही गायक भिन्ने बथान** – दोसर कतबो किछु कहओन, मुदा अमरेश करताह अपने मोनक ; हुनके सन-सन लोकक लेल 'कनही गायक भिन्ने बथान' कहल गेल हेतैक ।

ख) समुद्र, कपड़ा, नारि, गगन, अश्व ।

ग) राम टेकटारि गाम आएल छलाह । ऋण लेब ठीक नहि । वाल्मीकि रामायण लिखने छथि । रमण प्राणहुँसँ बढ़ि कए अछि । चन्द्रमाकें शशि सेहो कहल जाइछ ।

4. तन्त्रनाथ झा विरचित 'मुसरी झा' शीर्षक हास्य-प्रधान कविताक एहि अंशमे कहल गेल अछि जे गंगा पवित्र ओ धार्मिक महत्त्वक नदी अछि । एहिमे स्नान की? स्पर्श मात्रसँ जन्म-जन्मातरक पाप नष्ट भए मृत्युक उपरान्त मोक्ष प्रदान होइत अछि । गंगा अमृत-सदृश आ महिमा महान अछि । जहिना पानिमे नोन तीव्र गतिसँ विलीन तहिना गंगाजलक स्पर्श मात्रसँ पापक विनाश शीघ्रे भए जाइत अछि ।

**अथवा**

हरिमोहन झा लिखित 'बाबाक संस्कार' शीर्षक कथाक प्रस्तुत गद्यांशमे एक दिस भगीरथ-सन पिताक त्याग देखाओल गेल अछि जे कोना स्वयं कोनहुना अर्थात् मट्ठे पीबि जीवन यापन करथि, मुदा पुत्रकें दूध, दही, छाल्ही इत्यादि सुस्वाद भोज्य पदार्थसँ पोसथि, मुदा बादमे ओएह पुत्र

कर्त्तव्यच्युत ओ कृतघ्न भए गेलनि । एतबे नहि, पिताकेँ ओ पुत्रलोकनि वयस्क भेलापर व्यंग्यसँ 'जरद्‌गव' कहि सम्बोधित अर्थात् अपमानित करए लगलनि ।

5. क) महाकवि गोविन्ददास 'राम-वन्दना' मे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामक उदात्त गुण ओ अद्‌भुत महिमाक बखान कएलनि अछि । कवि एहिमे भगवान श्रीरामक मुक्त कंठसँ जय-जयकार करैत छथि । हुनक गुणगान देवता, मनुष्य, वानर, नभचर, निशाचर इत्यादि सभ जीव दिन-राति करैत रहैत अछि । हुनक वर्ण श्याम आ आँखि नीलकमल-सदृश सुन्दर लगैत छनि । ओ युद्‌धमे अद्‌भुत वीरताक प्रदर्शन करैत छथि । हुनक बाम आ दहिन भागमे क्रमशः धनुष ओ वाण सुशोभित छनि । ओ महासागर-सदृश धीर आ गम्भीर छथि ।

**अथवा**

प्रगतिवादी कवि 'यात्री' जी बाल-विवाह कुप्रथाकेँ दृष्टिमे राखि 'विलाप' शीर्षक कविता रचलनि । एहिमे एकटा मैथिल ललनाकेँ बचपनमे विधवा भए गेलाहक दारुणिक व्यथा चित्रित भेल अछि । अपन समाजमे बूढ़ व्यक्तिक विवाह बालिकासँ करा देल जएबाक कुप्रथा प्रचलित छल । परिणामतः ओ लगले विधवा भए जाइत छलीह । एहने एकटा नारिक आक्रोश एहिमे अभिव्यक्त पओलक अछि । ओ अपन दर्दनाक ओ शर्मनाक स्थितिक लेल सम्पूर्ण समाजकेँ उत्तरदायी मानैत अछि ; किएक तँ ओहि समयमे पुरुषे टाक जूति चलैक छलैक । कवि चाहैत छथि जे समाजमे नारिक सेहो समान मान-मर्यादा भेटैक ; ओहो सामान्य मनुक्ख-जकाँ जीवन-यापन करए । एहि कवितामे वर्णित मूल स्वर इएह अछि ।

ख) 'रमजानी'क कथावस्तुमे एक तांगावलाक जीवनक आर्थिक संघर्ष वर्णित भेल अछि । एक सर्वहारा व्यक्तिक जीवन-संघर्ष ओ क्रिया-कलापकेँ कथाकार ललित जाहि मार्मिकतासँ कएलनि, से स्वाभाविक आ मर्मस्पर्शी भए उठल अछि । कथाक अन्तमे रमजानीक चारित्रिक उत्कर्ष पराकाष्ठापर बूझि पड़ैत अछि ।

एक निर्धन व्यक्ति रमजानी रिक्शा चलबैत अछि, मुदा ओकरा ताड़ीक नशाक लति छैक । ओ बीमार पड़ैत अछि तँ घरमे भोजनोपर संकट आबि जाइत छैक । ओकरा ज्ञात होइत छैक जे टेनिस मैदानमे घोड़ाकेँ लिद्‌दी कए देलाक कारणेँ ओकरा बान्हल जा रहल छैक । ओ बेटापर क्रोध उतारए लगैत अछि । पत्नी हुस्नाक विलाप देखि रमजानी सेहो आओर दुःखी भए जाइत अछि । ओ ओकरा कहिओ सुख नहि दए सकलैक । अन्ततः ओ ताड़ी पीबापर आब अपव्यय नहि कए, बेटा मोस्ताककेँ पढ़बाक निश्चय करैत
अछि ।

**अथवा**

'बाबाक संस्कार' हरिमोहन झाक प्रसिद्‌ध कथा अछि । एहिमे एकटा बूढ़ लोकक दयनीयताक चित्रण भेल अछि । आजुक लोक क्षुद्र स्वार्थ आ भौतिक सुख-सुविधाक प्रति कतेक आन्हर भए गेल अछि, तकरे एहिमे मार्मिकताक संग चित्रण भेल अछि ।

एकटा भगीरथ बाबा रहथि । हुनका सन्तान नहि होइत रहनि, मुदा बादमे बाबा वैद्यनाथक वरदानस्वरूप एक के कहए सात-सात टा बेटा भेलनि । बाबा अपने कष्ट काटिओ कए सभ बेटाक पालन-पोषण नीक जकाँ कएलनि, मुदा बाबाक जखन कोनो प्रयोजन पुत्रलोकनिकेँ नहि रहलैक तँ ओ सभ ई चाहए लागल जे कोनहुना बाबाकेँ शीघ्र सद्गति भए जाइनि । ओना सभ बेटाक अलग-अलग मत रहनि, मुदा बाबाकेँ शीघ्र
सद्गति भेटि जाइनि, ताहिपर सभक मतैक्य रहैक । एम्हर बाबाकेँ माथो नहि दुखानि । एहिपर बेटा सभ व्यंग्य करैक जे ई जरद्गव छथि ।

एक बेर बाबाकेँ माथा दुखैलनि । ओ इच्छा प्रकट कएलथिन जे बेल पकाकए केओ दैत । उत्तर ‘ओषधं जाह्नवी तोयं वैद्यो नारायणो हरिः’ भेटलनि ।

एक बेर बाबाकेँ हिचुकी उठलनि ओ कछनी काछि पड़ि रहलाह । पुत्र सभ बाबाकेँ गंगालाभ हेतु लए जाए लागलैक । बीचमे बाबा किछु बाजथि कि ‘रामनाम सत्य’क तुमुल निनादमे बाबाक स्वर दबि जाइनि ।

बाबाकेँ माघ मास ओ पछबाक बसातमे गंगामे डूब देल जाए लगलनि । फेर चितापर सुताए लकड़ीसँ तोपि देल गेलनि । बाबा किछु बजबाक चाहलाह तँ ज्येष्ठ पुत्र ऊक लगा देलकनि । चिता धू-धू कए जड़ि उठल ।

श्राद्धकर्ममे जयवारक भोज भेलनि आ तकर दोसरे दिन खतियानमे भगीरथ बाबाक नाम कटाए ओहि स्थानपर अपन-अपन नाम जोड़बाए लेलकनि ।

# बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

## वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

**MAITHLI** **मैथिली**

**Set-II**

## MODEL PAPER SET - II

### मैथिली (50 अंक)

**परीक्षार्थीक लेल निर्देश : देखू Model Paper, Set - I क निर्देश ।**

**समय : 1 घण्टा + 37½ मिनट** **पूर्णांक : 50**

1. निम्न बहुवैकल्पिक उत्तरमे सही लिखू : 10 x 1 = 10

i) 'राम-वन्दना' शीर्षक कविताक रचयिता छथि :

क) तंत्रनाथ झा ख) गोविन्ददास

ग) चन्दा झा ग) विद्यापति ।

ii) 'रावण-अंगद संवाद' शीर्षकक रचयिता छथि :

क) गोविन्ददास ख) काञ्चीनाथ झा 'किरण'

ग) विद्यापति घ) चन्दा झा ।

iii) हरिमोहन झाक रचना अछि :

क) बन्धन ख) एक टा टुटैत बान्ह

ग) रमजानी घ) बाबाक संस्कार ।

iv) ललित रचित अछि :

क) मातृभाषाक माध्यमसँ शिक्षा ख) बाबाक संस्कार

ग) सीमन्तिनी घ) रमजानी ।

v) 'युग-चक्र'क रचयिता छथि :

क) चन्द्रभानु सिंह ख) राजकमल चौधरी

ग) रामकृष्ण झा 'किसुन' घ) चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' ।

vi) 'वर्तमान मैथिली कविताक स्वरूप' शीर्षकक लेखक छथि :

क) ललित ख) कपिलेश्वर झा

ग) सुधांशु 'शेखर' चौधरी घ) म॰ म॰ मुरलीधर झा ।

vii) रमानाथ झाक रचना अछि :

क) म॰ म॰ पं॰ बालकृष्ण मिश्र　　ख) हथटुट्टा कुर्सी

ग) बाबाक संस्कार　　घ) सीमान्तिनी ।

viii) 'विलाप' शीर्षकक रचयिता छथि :

क) तंत्रनाथ झा　　ख) राजकमल चौधरी

ग) यात्री　　घ) आरसी प्रसाद सिंह ।

ix) 'कोइली' विरचित अछि :

क) रामकृष्ण झा 'किसुन'　　ख) राजकमल चौधरी

ग) चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'　　घ) चन्द्रभानु सिंह ।

x) परमेश्वर झाक रचना अछि :

क) मैथिलीक आवश्यकता　　ख) सीमान्तिनी

ग) रमजानी　　घ) हथटुट्टा कुर्सी ।

2. निम्नमे कोनो **एक** विषय पर निबन्ध लिखू : 10

क) टेलिविजन　　ख) सह-शिक्षा

ग) वसन्त ऋतु　　घ) ग्राम पंचायत

3. निम्नमे कोनो **दू** प्रश्नक उत्तर दिअ : 2 x 5 = 10

क) निम्न शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू :

कृपण, अपन, आदि, देव, प्रेम ।

ख) निम्न शब्दसँ विशेषण बनाउ :

राष्ट्र, जल, विनय, घर, दया ।

ग) वाक्यकेँ शुद्ध करू :

श्रीयुत पण्डित जी आयल छलीह । वाल्मिकी रामायन लिखने छथि । चन्द्रमा शसी शेषर थिकाह । पुत्र प्रानहुसँ बढ़ि कए होइछ । ऋन लेलासँ ठीक नहि ।

4. निम्न उद्धरणक आशय लिखू :

5

"बेटा राकेश, अन्तर्जातीय विवाह कऽ तोँ हमर नाक कटा देलाह, तथापि दहेज नहि लेबाक जिद्द कऽ हाथ अबैत लक्ष्मीकेँ ठुकरा रहल छऽ ।"

**अथवा**

“शक्ति उपासक हे विद्यापति, हे जनकवि राखह देशक लाज
आबह कंसक राज हटा कय, लाबह कृष्णक समता राज ।”

5. निम्न प्रश्नक उत्तर दिअ : 2 x 7½ = 15

क) ‘रमजानी’क कथावस्तु लिखू ।

**अथवा**

‘बाबाक संस्कार’ शीर्षक कथाक सारांश लिखू ।

ख) ‘कोइली’ शीर्षक कविताक भावार्थ लिखू ।

**अथवा**

‘थर्मसक चाह’ शीर्षक कविताक भाव स्पष्ट करू ।

## उत्तर (ANSWERS)

1. I. (i)- (ख), (ii) – (घ), (iii) – (घ), (iv) –(घ), (v) – (घ),

(vi) – (ख), (vii) – (क), (viii) – (ग), (ix) – (घ), (x) – (ख)।

**2. (क) वसन्त ऋतु**- भारत मे छओ टा ऋतु होइत अछि, जाहिमे वसन्तकेँ ऋतुराज नामसँ लोक जनैत अछि। एकर अवधि अछि चैत आ बैसाख। एहि समयमे ई पृथ्वी पर अपन साज-सज्जाक संग दल-बल लऽ रंग-विरंगक परिधान धारण कएने रहैत अछि।

वसन्तक आगमनक समयमे प्रकृति अभिनन्दन करक-लेल अपन उजरल रूपक परित्याग कए उपस्थित रहैत अछि। कोमल किसलय आ मृदुल मंजीरक हेमहार, रंग-विरंगक प्रफुल्ल पुष्प, शीतल मन्द सुगंध समीर, भ्रमरक गुज्जन आ कोकिलक तान ऋतुराजक आगमनक सूचना दऽ कऽ प्राकृतिक आनन्दक आभा पसारि दैत अछि।

एहि ऋतुमे ग्रीष्मक ताप, वर्षाक झड़ी, शरदक शीत, हेमन्तक पाला आ नहि शिशिरक जाड़े देखाइ दैत अछि। अपन अलौकिक आभाक बल पर सबकेँ सुखशान्ति आ सुविधा प्रधान कएनिहार वसंत ऋतुराज नामसँ जाइत अछि। एहि ऋतुमे प्राकृतिक शोभा अवर्णनीय रहैए। एहि समयमे सभ गाछ-वृक्षमे नव पल्लव लगैत छैक; आमक गाछमे आकर्षक मज्जर मोनकेँ गद्-गद कए दैत अछि। सरिसवक पीयर-पीयर फूल, तीसीक नील-नील फूल, कुसुमक लाल-लाल फूल आ उद्यानक

रंग-विरंगक फूल सब अवनीक आँचरकेँ अवर्णननीय आभा प्रदान करैत अछि। स्वच्छ सरोवरक अमृत-सदृश्य निर्मल जलमे-क्रीड़ा करैत कमलक कली कमनीय कटाक्षसँ दर्शकक मनकेँ आकृष्ट कए अपूर्व आह्लाद उत्पन्न कए दैत अछि। फलतः अंग-अंगमे उल्लास आ उमंग उमड़ि जाइत अछि। उद्यानमे उपस्थित लवंगलता फूल खिल-खिल हँसैत जूही, चमचम करैत चम्पा, चमेली, बेली आ कचनारक सुगन्धिसँ अंध बनौनिहार इन्द्रकमल, कामिनी आ रजनीगंधा स्वागत करैत गुलदाउदी, चन्द्रकला आ प्रफुल्ल पुष्पराज गुलाब वायु मण्डलकेँ आमोदित कएने रहैत अछि। फलतः उद्यान सभक छवि-छटा देखि लोकक मन मुग्ध भऽ जाइत छैक। एहि ऋतुक वर्णन बहुतो कविलोकनि अपन-अपन लेखनीमे भिन्न-भिन्न रूपमे सहेजक कोशिश करैत आएल छथि। ठीक ताही कड़ीक एकटा श्लोक कवि कालिदासक शब्दावलीमे एहिठाम द्रष्टव्य अछि-

**''सुभगसलिलावगहा : पाटलसंसनि, सुरभिवनवाताः।**

**प्रच्छायसुलभनिद्रा दिवसाः परमरमणीयाः॥''**

वास्तवमे प्रकृतिक असली छटा मानवक हृदयमे कमनीय कल्पनाकेँ जगा कए नीरस जीवनकेँ सुन्दर स्वरूप प्रदान करैत अछि। अतु वसंतकेँ वास्तवमे ऋतुराजक संज्ञा देल गेल अछि।

**3.** (क) कृपण - उदार अपन - अनकर

आदि - अन्त देव - दानव

प्रेम - घृणा

(ख) राष्ट्र राष्ट्रीय जल - जलीय

विनय - विनीत घर - घरेलू

दया - दयालु।

(ग) श्रीयुत पंडित जी आयल छलाह। वाल्मीकि रामायण लिखने छथि। चन्द्रमा शशि शेखर

थिकाह। पुत्र प्राणहुँसँ बढ़ि कए होइछ। ऋण लेनाइ ठीक नहि।

**4.** प्रस्तुत पाँती डॉ. सुभाषचन्द्र सिंह विरचित 'बंधन' शीर्षक कथा सँ उद्धृत अछि। एहि कथा मे राकेश कथित ब्राह्मण जातिक रहितहुँ शीला नामक अनुसूचित जातिक एकटा लड़की सँ विवाह करैत अछि। राकेशक एहि कृत्य सँ पिता जयमंगल झा अत्यन्त दुखी होएत छथि। ओही क्रममे ओ अपन पुत्र सँ कहैत छथिन्ह जे अन्तर्जातीय विवाह कऽ तों समाज मे हमर नाक कटा देलाह संगहि दहेज नहि लेबाक जिद्द कऽ तों अबैत लक्ष्मीकेँ सेहो ठुकरा रहल छऽ। अभिप्राय जे राकेश केँ पढ़ाबऽ मे पिता केँ बड़ रुपैया खर्च भेल छन्हि जकर क्षतिपूर्तिक आशा ओ राकेश विवाहमे तिलक-दहेज सँ कर चाहैत छलाह, परन्तु दहेज-विरोधी राकेशक कृत्य सँ हुनक मनोरथ पूरा नहि भेलन्हि।

**अथवा,**

प्रस्तुत पद्यांश राजकमल चौधरी लिखित 'राधा तोहर बेचि रहित छथि देह' शीर्षक कवितासँ लेल गेल अछि। एहिमे देशक जे स्थिति भऽ गेल अछि, सभ तरि कंसक राज व्याप्त भऽ गेल अछि ताहि सँ मुक्तिक कामना कवि

विद्यापति सँ कऽ रहल छथि। जे कवि कहि रहल छथि जतऽ राधा देह बेचवा लेल मजबूर भऽ रहल होथि, नारीक लाज बिका रहल हो, धरती पानी बिना आगिक गोला बनऽ जा रहल अछि। जतऽ एक मुट्ठी अन्न आ एक टूक कपड़ा लेल युद्ध करबा पर सभ उतारू अछि ओतऽ अहाँ एक बेर आउ। शक्तिक उपासक विद्यापति कँ कवि आह्वान कऽ रहल अछि, तकरा अहाँ आबि मुक्ति दिआउ। सभ ठाम श्रीकृष्णक समता राजक सृजन करू। पुनः भक्ति आ शृंगारिक गीत सँ सभ कँ अपना दिस कऽ लिअ। कंसक पापी राजकँ हटाकऽ श्रीकृष्णक समता राज स्थापित कऽ दियौ। कवि विद्यापतिक स्मृति तर्पणक मादे सुख-चैन अनबाक कामना करैत छथि।

**5. (क)** आधुनिक मैथिली साहित्यक कथा विधा मे 'ललित' जीक नाम सफल कथाकार रूपमे स्थापित भए चुकल अछि। अपन कथा मे पात्र ओ घटनाक चयन निम्न ओ मध्यवर्गीय समाज सँ करैत छथि। प्रस्तुत कथा 'रमजानी' मे ललित जी एकटा तांगाबलाक जीवनक आर्थिक पक्ष ओ ताहि मध्य ओकर जीवन-संघर्षक सजीव चित्रण कएलन्हि अछि। एक सर्वहारा वर्गक निर्धन व्यक्तिक संघर्षमय जीवनक क्रिया-कलापक चित्रण अत्यन्त स्वाभाविक मर्मस्पर्शी बूझि

पड़ैत अछि। कथाक अन्तिम अंशमे 'रमजानी' क चारित्रिक उत्कर्ष देखाओल गेल अछि।

कथाक प्रारम्भ गाँधी-पार्क सँ होइत अछि। ओतए अखण्ड सूत्र-यज्ञ ओ अखंड रामधुन चलि रहल छैक। पार्कक दूबिपर मोट-मोट बाबू-भैया खद्धड़क धोती, कुर्त्ता ओ टोपी पहीरि चर्खा सँ सूत कटवा मे अपस्यांत छलाह। पार्कक बाहर भालसरीक छाहरि तर रमजानी तांगा लेने सवारीक प्रतीक्षा मे ठाढ़ रहए। अन्त मे तीनटा सवारी टीसन जाएबला भेटलैक। ओकरा पहुँचाए आपसी मे पसीखाना लग आबि ओ थकथका गेल। ताड़ीक अम्मत स्वाद मन पड़ि गेलैक आ' संगहि भूजाबालीक कुरकुरौआ भूजा आ चखना ओ लाल-लाल झूर कँ छानल कचड़ी पर लोभ कँ संवरण नहि सकल, मुदा रमजानी कँ आजुक ताड़ी महग पड़ि गेलैक। ओ ताड़ी नहि पचलैक आ घर अबैत-अबैत दूटा रद्द भेलैक। ज्वर सँ तीन दिन धरि पीड़ित रहल। चारि दिन पर मन किछु हल्लुक बुझेलैक। आंगन मे ओसारा पर रमजानी पत्नी हुस्ना कँ देखलक आ गरियाबए लागल। पानि मंगलक ओ घोड़ी पर चिन्ता भेलैक। पूछलक - 'घोड़ी कहाँ हउ'? हुस्ना किछु खएबाक आग्रह कएलकैक। रमजानीक उत्तर भेलैक - 'आटा हउ, बनियाँ उधार देतउ?''

हुस्ना जोगार मे लगले छल कि ताबत ओकर जेठ बेटा आबि बाजल जे घोड़ी तऽ क्लब केर टेनिस-फील्ड मे लिद्दी कऽ देलकैक। चपरासी फाटक मे नेने जाइ हइ। एहि बात पर भुखाएल रमजानी अपन जेठ बेटा मोस्ताककँ चुड़की

पकड़ि पिताएल पटकि देलकैक 'आ लात-मुक्का सँ खूब पिटाइ कएलक। एहि दृश्य कँ देखि माइक ममता जगलैक आ हुस्ना हाथक घैल पटकि छाती पिटैत गर्दबाहि करए लागलि। लोक सभकँ जोर-जोर सँ कहलकै जे मोस्तकबा कँ मारि देतैक। दौड़ैत जाह। रमजानीक संगी जे ओकर नंगोटिया रहैक आबि कँ थोर-थाम्ह लगाए हुस्ना कँ कहलकै-भउजी, एखन बेराम मे लोककँ बेसी गोस्सा होइत छैक, तों नहि ताकुति करबही तऽ आन के कतरैक।

एहि पर हुस्ना आटा-पानिक जोगार मे विदा भेलि। देरी भेला पर रमजानी कँ चिन्ता ओ अपना पर ग्लानि भेलैक। बाजल-ओह! हुस्ना कँ कहिओ सुख नहि भेलैक। दस बरस भेलै निकाह कएना आ सुखक नाम पर गारि आ फझति। रमजानी मन कोना दन क' उठलैक। बेटाकँ अनेरे डेङ्गा देलियैक। एही गुन-धुन मे पड़ल रहए ताबत रमजानी कँ ओकर बाप जहूर मियां मन पड़लैक। छओ गोट घोड़ा आ तीन टा बग्गी रखैत छल। नामी छल शहर मे। बाबू-भैया सभ ओकरे तांगा पर चढ़ैक आ एखन कोनो बाबू-भैया तांगा पर चढ़निहार नहि।

अन्त मे रमजानी रिक्शा किनबाक निश्चय कएलक। मोस्ताक कँ चन्सगर देखि आ ' सटीक तांगा हँकैत देखि ओकरा पढ़ेबाक निश्चय कएलक। ओ सोचलक जे जतबा पाइ एकटा ताड़ी मे जिआन होइत छैक ततवा पाइ सँ मोस्ताक पढ़ि लेत। मोस्ताक कँ जखन पढ़बाक बात पुछलकै तऽ आश्चर्य सँ मोस्ताक बाप दिस ताकि किताब, सिलेट, पेन्सिल इत्यादिक विषय मे पूछलकैक। बापक उत्तर छल-सभ भऽ जेतौक। सभ गारि-मारि बिसरि मोस्ताक कूदि उठल। हुस्नाक दृष्टि

मे जिज्ञासाभाव छलैक आ' रमजानीक आँखि मे समर्थनक हँसी। मोस्ताक अपन संगी-तुरियामे एहि शुभ-संवाद कँ कहि आएल।

एहि रूपेँ समस्त कथा मे अभावक दृश्य रहितहु अंत मे रमजानीक चरित्र उत्कर्षसँ परिपूर्ण भए गेल अछि।

**अथवा,**

'बाबाक संस्कार' शीर्षक कथाकार छथि प्रो० हरिमोहन झा। मैथिली गद्यक आनो विधा पर हिनक रचना प्राप्त होइत अछि, परंच लोकप्रियताक प्रमुख कारण अछि कथा साहित्य। हिनक कथाक आधार प्राचीनता ओ आधुनिकताक मध्य समन्वय स्थापित करब अछि। आधुनिक युगक लोक कोन प्रकारेँ अपन पूर्वजक प्रति श्रद्धा ओ सम्मानक भाव नहि रखैत अछि इएह एहि 'बाबाक संस्कार' शीर्षक मे उपस्थित कएल गेल अछि। कथा निम्न प्रकारेँ अछि-

भगीरथ बाबा कँ पुत्र-प्राप्तिक बड़ लालसा रहनि। एहि निमित्त साले-साल अजगैबीनाथ सँ जल बोझि बाबा वैद्यनाथ कँ कामरजल चढ़बैत छलाह। बाबाक कृपासँ सात गोट पुत्र भेलथिन्ह। बाबा प्रसन्न भए अथक परिश्रम सँ परती-परांत कँ तोड़ि भीठ खेत बनओलनि। बैसाख-जेठ मास-पानि सँ पटाए कँ कलमबाग लगौलनि। आब बाबा धन-जन सँ सम्पन्न भए भेलाह।

सब सल्तनत करैत-करैत भगीरथ बाबा बूढ़ भए गेलाह। आब सातो बेटाक यद्यपि सात विचार रहनि, परंच पिताक मृत्यु शीघ्र भऽ जाइन्ह, एहि बात पर सब एकमत छलाह। बाबा कँ सब जरद्गव कहए लगलथिन्ह। बहरघरा मे जे बूढ़ा

सूतथि से सबकेँ होइन्ह जे कहिआ खाली होएत जे ओहि मे माल-जाल बान्हब, परंच बूढ़ा केँ तऽ कहिओ मथदु:खी पर्यन्त नहि होइन्ह। सब बेटा कहए लगलथिन्ह जे हमरा सबहक अंकुरी खाए केँ मरताह। यमराज केँ हिनकर बही हेरा गेलन्हि। क्रमश: भोजनोकाल मे बूढ़ाक पाचन-शक्ति पर आलोचना होइन्ह जे-''तृष्णा न जीर्णा वयेमव जीर्णा:।'' बूढ़ा अपने रुसथि, अपने बौंसथि। एक दिन बूढ़ा केँ आमाशय उखड़ि गेलन्हि। इच्छा भेलन्हि त डेराइते बजलाह-केओ कांच बेल पका कऽ दैत। उत्तर भेटलन्हि-। 'ओषधं जाह्नवी तोयं वैद्यो नारायणे हरि:।' ओहि दन सँ बूढ़ा डरे उकासियो ने करथि, जे लगले काशी पहुँचा देत।

भगीरथ बाबा केँ आब ई बुझबा मे भांगठ नहि रहलन्हि जे हुनक स्वास्थ्य ओ दीर्घायु सँ सब अकच्छ अछि। आब जीवित रहि ओ अपराध कए रहल छथि। एक दिन बाबा कछनी काछि पड़ि रहलाह। एक बेर हिचकी उठलन्हि। बेटा सब बाटे तकैत रहिन। बाबा केँ चटपट अर्थी पर उठाए सातो 'सुपुत्र' गंगा-लाभ हेतु चौमथ घाट लए गेलन्हि। जँ बाबा बाट मे किछु बाजए चाहथि तँ 'राम नाम सत्य' क तुमुल ध्वनि मे विलीन भए जाइन्ह।

माघ मासक समय। हड्डी गलबएबला प्रचंड पछवा। भरि छाती गंगाजल मे बैसाए सातो बेटा भगीरथ बाबा केँ गंगा लाभ करबए लगलथिन्ह। बूढ़ा थर-थर कँपेत कतबो बेटा सभक नेहोरा-मिनती कएलनि जे जलसँ बहार लए चलह, परंच सभ व्यर्थ भऽ गेलनि। जखन जल-झम्म सँ बूढ़ा ज्ञान शून्य भए गेलाह तखन सभ उठा केँ श्मशान-घाट लए गेलथिन्ह। ओहि दिन माघी पूर्णिमा ओ परात भैने भदवा

पड़ैत छल, तँ आजुक मृत्यु बड़ विलेषण। बालक सभकेँ कुसियार बेचब, तमाकू-मेरचाइ ओ हाट सँ बड़द कीनब सभ कार्य सुतरि जएतन्हि। प्रसन्न भए सातो भाइ सात मन जारनि-कीनि चिता पर राखि देल। बूढ़ा एक बेर हाथक संकेत सँ किछु सुगबुगाएलाह। तुरत ऊपर सँ मोटगर लकडीक गोटना सँ चापि चेरका वर्षा सँ तोपि देलथिन्ह। तथापि बाबा केहन कठजीव छलाह जे किछु बजबाक लेल मुँह खोललनि। जेठ बालक शीघ्रे ओहि मे ऊक लगा देल। सभ मिलि बाँसक फट्ठा सँ बाबाक कपाल-क्रिया करए लगलाह। चिता प्रज्वलित भए बाबाक शरीर केँ भस्म कए देलक।

गाम आबि सातो भाइ सात गाम जयवारी भोज कएलनि। महापात्र केँ दान भेटल। बाबाक पनही ओ खराम पर्यन्त दान कए हुनक अस्तित्व केँ मेटा देल गेल। द्वादशाहक पश्चात् सातो भाइ बाबाक नाम खतियान सँ कटबाए अपन-अपन नाम दर्ज करबैत गेलाह।

एहि रूपेँ 'बाबाक संस्कार' शीर्षक कथा मे हरिमोहन बाबू कलियुगिआ श्रवण कुमार सन पुत्र सभ पर पैघ कटाक्ष कएलनि अछि। कथा मे हास्यक संग व्यंग्य भरल अछि। आजुक अधिकांश पुत्रलोकनिक पिताक प्रति एहने श्रद्धा ओ सद्भाव रखैत अछि। तँ एहि सँ पिताक प्रति पुत्रक कर्त्तव्यबोध दिसा प्रो. हरिमोहन झा सटीक वाण छोड़लनि अछि, परंच एहि सँ आहत होएबाक स्थान पर शिक्षा-ग्रहण करब उचित थिक।

**( ख )** श्री चन्द्रभानु सिंहक 'कोइली' शीर्षक कविता लोकगीतक धुन मे लिखल गेल अछि। एहि कविताक गेयधर्मिता कविता सँ विशेष गीते दिश घिचाइत अछि। कोइलीक आगमन वसन्त ऋतु मे होइत अछि। वसंत कँ ऋतुराज कहल जाइत अछि। कवि कहैत हथि जे कोइलीक रंग कारी होइतहुँ एकर बोल अनमोल होइत अछि। मधुर स्वर सँ भरल कोइलीक बोल मे जादुई शक्ति रहैत अछि।

कवि कोइलीक आगू मे मनुष्यक बोल कँ बेसुराह कहलनि अछि आ तँ कोइलीक टोन ओहि सँ फराके रहैत अछि। लोकक बोल तँ कोइलीक बोलक आगू कम मधुर होइत अछि। कतोक लोकक बोल तँ ओल सन कव-कव सेहो होइत अछि, परंच कोइलीक स्वर पर पपीहाक 'पी'-'पी' शब्द सेहो कतेक मधुर होइत अछि। वसन्त मादकताक सेहो सूचक थिक। तँ कवि वसन्त कँ अगिलगुआक संज्ञा दैत छथि, कारण एहि मे उद्दीपन विभाव रहलाक कारणँ लोकक चित्त सँ उद्दीप्त करबाक सामर्थ्य रहैत अछि। एहि वसन्तक दूत बनि कँ कोइलीए अबैत अछि आ' से बहुत पहिने। वसन्तक आगमनक सूचना इएह लोक कँ अपन मधुर स्वरक माध्यम सँ दैत छैक। तँ कवि कोइली कँ विधिकरनीक संज्ञा देलन्हि अछि, परंच एकर संगहि कारी रंगक होएबाक कारणँ 'जरलाही' शब्द सँ सेहो संबोधित करैत छथि। कोइलीक लोल केर तुलना कवि भरल गहुमक घोघ सँ कएलन्हि अछि।

कोइली जखन आमक डारि पर बैसि अपन पंचम स्वरक अलाप देबए लगैत अछि तखनहि आमक डारि मे नव पल्लव अंकुरित होबए लगैत अछि। प्रेमालाप-सम्बद्ध चर्चा मे कोइलीक स्वरक उल्लेख अवश्य होइत अछि।

अंत मे कवि कोइलीक स्वरक तुलना श्रीकृष्णक मुरलीक स्वर सँ करैत छथि। जहिना श्रीकृष्ण यमुनाक कछेर पर कदम्बक डारि पर बैसि मुरलीक स्वरक तान अलापैत छलाह तहिना कोइली आमक डारि पर बैसि अपन मीठ स्वर सँ जन-मानस कँ मुग्ध कए दैत अछि।

**अथवा,**

मैथिल मुसलमान द्वारा मैथिली साहित्य-सेवीक रूप मे फजलुर रहमान हाशमी एकटा सशक्त प्रमाण छथि। मैथिली काव्य-क्षेत्र मे हिनक अवदान समय-समय पर कविताक माध्यम सँ दृष्टिगोचर होइत रहैत अछि।

प्रस्तुत कविता 'थर्मसक चाह' नाम सँ तँ सामान्य बूझि पड़ैत अछि, परंच एकर अन्तर्निहित भाव अत्यन्त गंभीर अछि। मुक्तक काव्य मे लिखल ई रचना स्वरूप मे प्रतीकात्मक अछि। एहि कविताक माध्यम सँ कवि कहि रहल छथि जे जाबत काल धरि लोकक संग सम्पत्ति रहैत अछि ताबत कोनो ने कोनो लोभ बस लोकक जात-अबरजात बनल रहैत अछि, मुदा सम्पत्ति घटि गेला पर ओकरा लग मित्रगोष्ठी स्वतः समाप्त भए जाइत अछि। एहन व्यक्तिक समाज मे सम्मानो कम भए जाइत अछि। महाकवि विद्यापतिओ लिखने छथि-

**''धनिकक आदर सब तहँ होय,**

**निर्धन वापुर पूछ न कोय॥''**

हाशमी साहेब थर्मसक चाहक माध्यम सँ अमीर ओ गरीबक परिचय दैत कहैत छथि जे थर्मस मे गरम चाह जाधरि भरल रहैत अछि ताधरि मित्रलोकनिक आबा-जाहीक धरोहि लागल रहैत अछि आ 'थर्मसक चाह जखन सठि जाइत अछि तऽ मित्र-मंडली पतनुकान लए कोनो दोसर चाहबला मित्रक ओहिठाम चल जाइत छथि। एहि सँ कवि एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत छथि जे मित्रक आगमनक प्रमुख कारण अछि हमर थर्मसक चाह। एहि कारणे थर्मस मे चाह रिक्त होइतहिँ ओ पुनः एकरा भरि कँ रखैत छथि। हुनका इहो शंका बनल रहैत छन्हि जे जँ थर्मस मे चाह नहि रहत तँ हमर मित्रगण आनक मित्र बनि जएताह। तँ कवि कहैत छथि-

**''थर्मसक रिक्त होइतहि**

**हम्मर मित्र बनि जायत**

**दोसरक मित्र।''**

एहि कविता मे हाशमी जी थर्मसक चाहक माध्यम सँ स्वार्थी मित्रलोनिक मनोवृत्ति ओ क्षुद्र क्रियाकलापक परिचय दए रहल छथि। एकरा युग-धर्म कहल जा सकैत अछि। तँ कहलो गेल अछि-''स्वारथ लागि करहि सब प्रीति''-**तुलसीदास।**

***

# बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

## वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

**MAITHLI** **मैथिली**

**Set-III**

## MODEL PAPER, SET – III

**समय : 1 घंण्टा + 37 1/2 मिनट**

**पूर्णांक : 50**

**परीक्षार्थी क लेल निर्देश : देखू Model Paper, Set - I क निर्देश।**

**1.** निम्नलिखित विषयमे कोनहु एक पर निबंध लिखू: 1

x10 = 10

(क) कृषि क्षेत्र मे विज्ञानक चमत्कार

(ख) समाचार पत्र

(ग) वयस्क शिक्षा।

**2.** 'राम वन्दना' शीर्षक कविताक सारांश लिखू। 7 1/2

**अथवा,** 'राधा तोहर बेचि रहल छथि देह' 'शीर्षक कविताक सारांश लिखू।

**3.** म. म. बालकृष्ण मिश्रक परिचय दिअ। 7 1/2

**4. अर्थ स्पष्ट करू:**

5

**''रे रे कुमित कठोर मनुष्य गजना रघुनंदन।**

**नदी कि गंगा होथि वृक्ष की छथि हरिचन्दन॥''**

**अथवा**

**''ई बाल बुद्ध भिखारी सभकेँ कयलक अछि मस्त सारि।**

**दुर्दान्त भूख केरि भेल अन्त स्वागत मिथिला ऋतुपति हेमन्त॥''**

**5. संक्षेपण करू:**

5

एक दिश अभिसारिका अपन संकेत स्थल पर मिलनक लेल प्रस्थान कए गेल छथि, मुदा दोसर

दिश ई दम्पत्ति ओहि वेटिंग रूमक एक कोनमे कुहरि रहल छल।

**6. पर्यायवाची शब्द लिखू:**

5

प्रकाश, पृथ्वी, नदी, दुर्गा, दु:ख।

**7. अनेक शब्दक एक शब्द लिखू:**

5

विष्णुक उपासक, दियादनीक बेटा, जे पालन करए, पितीक बेटा, खेल खयनिहार।

**8. संधि-विच्छेद करू:**

5

हिमालय, विद्यालय, निर्दोष, निर्मल, निष्काम।

***

## उत्तर (ANSWERS)

**1. (क) कृषि क्षेत्रमे विज्ञानक चमत्कार**- भारत एकटा कृषि-प्रधान देश अछि। एहिठामक अधिकांश लोक गाममे बास करैत अछि, जनिक प्रधान पेशा कृषि पर निर्भर करैत अछि गामक उन्नति होएतैक तखनहि भारतक उन्नति सम्भव भए सकैत अछि। से तखनहि होएत जखन कि आधुनिक युगमे एकर आधुनिकीकरण कएल जाए।

प्राचीनकालमे लोक हड़-बरदसँ खेती करैत छल। सम्प्रति ओकर स्थान आब वैज्ञानिक हड़

आ कि ट्रैक्टर लए रहल अछि। आजुक युगमे जोतब, चौकी देब, बीया पारब आदि जतेक काज-सभ होइत छैक, से मशीन आश्रित औजारसँ कएल जाइत छैक। एतबहि नहि आब लोक दाओनो बड़दसँ नहि कए रहल अछि। अन्नक तैआरी सेहो गृहस्थ थ्रैसर राखि करैत अछि।

खेतीक लेल जे भूमि छैक तकरा लोक विशेष उपजाऊ बनबै चाहैत अछि। ओना वैज्ञानिकलोकनिक दृष्टिमे सब भूमि उपजाऊए अछि। तथापि माटिमे कोन तहरक खाद देल जाए, जे फसिल नीक जकाँ उपजाओल जा सकैत अछि, से कएल जाइ; बीयाकेँ स्वस्थ राखक लेल कीटनाशक दवाइक प्रयोग कएल जाइछ। आब त खेतक कमौनी सेहो वैज्ञानिके हरसँ होइत अछि। पटौनीक लेल नलकूप, दमकल,

बोरिंग आ नहरि स्थान आ समय अनुसार उपयेाग कएल जाइत अछि। फलतः बोरिंगक नजदीकमे जे खेत अछि से सालो भरि उपजा दैत अछि।

आजुक समयमे अनुसंधानसँ लोक नव-नव तरहक उन्नतक बीयाक प्रयोग कए अधिक उपजाकए एक तरहक चमत्कार देखा रहल छथि। बाढ़ि आ सुखाड़ पर नियंत्रण कए विज्ञान कृषकेँ नव जीवन दए कर्मठ बना देलक। आजुक युगमे बढ़ैत जनसंख्याक उद्देश्यकपूर्ति लेल आवश्यक अन्नक उत्पादन कए विज्ञान कृषिमे सफल प्रयोग कए रहल अछि।

पहिने कृषकक लेल सालमे नओ मास बेकारीक समस्या रहैत छल, लेकिन आजुक युगमे विज्ञान हुनका सबकेँ सब दिन काज दैत रहैत छनि आ हुनकर खेत सब दिन हरियर रहैत छनि।

**(ख) समाचार पत्र**- समाचार पत्र विभिन्न स्थानक आ विभिन्न वस्तुकेँ संकलित कए एकठाम समाचार पहुचेनहार पत्रकेँ कहल जाइत अछि। जकरा अवलोकनसँ संसार तथा देशक विविध विषय-वस्तुक ज्ञान सहजता सँ घर बैसल प्राप्त होइत अछि।

एहि पत्रक कइएकटा श्रेणी बनाओल अछि, यथा-वार्षिक, अर्धवार्षिक, मासिक, पाक्षिक साप्ताहिक आ दैनिक। एहि सब श्रेणी मध्य दैनिक समाचार पत्रमे नित्य प्रतिक घटना समूहक उल्लेख मुख्य रूपसँ रहैत छैक या स्थायी विषयक चर्चा गौन रूपसँ अबैत अछि, मुदा अन्य समाचार पत्रमे समाचार गौण रहैत-छैक आ स्थायी लेख मुख्य रूपसँ देल जाइत छैक।

एकर उत्पत्ति सोलहम शताब्दीमे भेल। ई सर्वप्रथम इटलीक बेनिस नगरमे भेल

छल। बहुत दिनक बाद 1724 ई० मे ई भारत आएल। एकरा एहि ठाम अननिहार छलाह इसाई धर्मक प्रचारक। सबसँ पहिल पत्र जे निकलल तकर नाम राखल गेल 'इण्डियन गजट' तकर बाद छापाखानाक वृद्धि होबए लागल संगहि कागजक उत्पादन सेहो बढ़ए लागल। शिक्षाक प्रचार-प्रसार विकासोन्मुख भेल। लोकक मोलमे ज्ञानपिपासा जिज्ञासा जागृत भेल। समाचार पत्रक चलती होबए लागल। वैज्ञानिक विकाससँ कल-पुर्जाक आविष्कार एकर प्रकाशन आ प्रचारमे बड़ सहायता कएलक।

एहि पत्रसँ लोककेँ बड़ लाभ बुझबामे आबय लगलैक। आजुक बेकारी (परावलम्बी) युगमे लोकक दृष्टि सबसँ पहिने विज्ञापनक पृष्ठ सब पर खिंचाए लगलैक। लोक घर बैसल विज्ञापनक आधार पर जीविका निश्चित करबामे सफलता पाबए लागल। व्यापारीगण भिन्न-भिन्न वस्तुक भावक ज्ञान पाबि क्रय-विक्रय कए लाभ कमाए लगलाह। सरकारक आदेश, नेताक पथ-प्रदर्शन आवश्यक विषयक उल्लेख जनताक पथ-प्रदर्शनमे सहायक सिद्ध भेलैक। सरकार आ जनताक सम्बन्धक उल्लेखसँ राष्ट्रीय चेतना जागृत भेलैक। शिक्षाक विषयक उल्लेखसँ शिक्षाक विकासमे सहायता भेटैत अछि। विभिन्न विषयक ज्ञानसँ सामाजिक आ राजनीतिक स्तरक उन्नति होइत छैक। बहुतो अज्ञात विषयक अध्ययन आ अनुसन्धानक सूत्रक उल्लेख सँ अनुसंधान दिश लोकक ध्यान आकृष्ट होबए लागल। जिज्ञासा वृत्तिक विकास आ ज्ञानपिपासाक तुष्टि भेलैक। ई प्रगतिक सम्बल जनमनोरंजनक आधार भए गेल अछि।

एहि सँ जौं लाभ तऽ हानियो होइत छैक; असत्य समाचार भए गेल तऽ जनता भ्रम मे पड़ि कए पैघो गलती कए सकैत अछि, जाहि सँ ओकरा कष्टो उठाबए पड़ि

सकैत अछि। निकृष्ट विज्ञापनसँ जनताक अभिरुचि पर घातक असरि पड़ि सकैत अछि। अश्लील चित्रक प्रकाशनसँ जनता पर कुप्रभाव पड़ि सकैत अछि। धर्म तथा सम्प्रदाय सँ सम्बद्ध उटपटांग लेखसँ धार्मिक तथा साम्प्रदायिक विद्वेष पसरि सकैत अछि।

एहि तरहें नियंत्रित रूपसँ प्रकाशित लोकजीवनकँ मंगलमय बना दैत अछि। ई ओहने कार्य करैत अछि, जेहन मनुष्यक शरीर मे अंग करैत अछि। एहि लेल समाचार पत्र लोकक आँखिक कार्य करैत अछि।

**2.** 'राम वन्दना' महाकवि गोविन्ददासक पद थिक। गोवन्ददास पदक विन्यासी कवि छथि। कवि भगवान श्रीरामक मुक्त कंठसँ जयगान कएने छथि। ओ रघुकुलकँ आनन्द देनिहार तथा जनकतनयाक स्नेहक आधार छथि। देवता, मनुष्य, वानर, नभचर, निशाचर इत्यादि सभ हुनक मुक्त कंठसँ प्रशंसा करैत अछि। हुनक वर्ण श्याम ओ नेत्र नीलकमल जकाँ भव्य लगैत अछि। ओ युद्ध मे वीरताक प्रदर्शन करैत छथि। हुनक बामभागमे धनुष तथा दहिन मे वाण अछि। हुनक विनती शिव, ब्रह्मा, सनक, सनन्दन आ मुनिलोकनि हाथि जोड़ि कँ करैत छथि। केसरी नन्दन हुनक अपार भक्त छथि।

**अथवा,**

स्व. राजकमल चौधरी द्वारा रचित प्रस्तुत पद मे विद्यापतिक प्रति अपार स्नेह देखौलनि अछि। ओ शब्द-भाषा लऽ हुनका श्रद्धांजलि दऽ रहल छथि। शृंगारक युग बदलि गेल। समाज नित नव-नव समस्यासँ ग्रस्त भऽ गेल अछि। बाढ़िक प्रकोप, रौदी सँ कृषक बेहाल अछि। देश जरि रहल अछि। मुट्ठी भरि अन्नक लेल लोक

लालायित अछि। स्नेह प्रेमक दीप मिझा गेल छैक। राधाक कल्पना नायिका (राधा) देह बेचबाक लेल तत्पर छथि। कवि विद्यापतिसँ देशक रक्षक लेल प्रार्थना करैत छथि। विद्यापतिक समयमे मिथिलाक स्वर्णिम दिन छलैक। वर्तमान युगमे मिथिला दुर्दशाग्रस्त भऽ गेल अछि। एइह कविक उद्देश्य अछि।

**3.** मिथिलाक पवित्र भूमिमे युग पुरुष जन्म लैत छथि। म. म. बालकृष्ण मिश्र ओही परम्पराक पुरुष छथि। हिनक जन्म 1295 सालमे सरिसव ग्रामक नवटोलसे भेल छल। हिनक पिता गोसाईं मिश्र अयाची मिश्रक छोट भाय छलथिन। ओ अपन मामा नीलाम्बर झा सँ मातृक मे विद्यारम्भ कयलनि। पिताक मृत्युक पश्चात् ई घरक समस्त काज करैत गंगौलीक नैयायिक लोकनाथ सँ विद्या सीखए लगलाह। अपन वचनक चातुरीक बल पर ई अपन गुरुसँ आगाँ बढ़ि गेलाह। दरभंगा मे आठ वर्ष रहि ओ संस्कृत साहित्यक अध्ययन-मनन कयलनि। विशिष्ट गुण सँ प्रभावित भऽ मदनमोहन मालवीय हिनका बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय मे नियुक्त कयलनि। निबंधकार रमानाथ झाक ई प्रियपात्र छलाह।

**4.** प्रस्तुत पद्य खंड कवीश्वर चन्दा झाक 'मिथिला भाषा रामायण' क लंकाकांड सँ उद्धृत अछि। अंगद रामक गुणगान करैत कहैत छथि जे श्रीरामकेँ मनुष्य कहब उचित नहि; गंगाजल केँ पानि कहब उचित नहि, श्रीखण्ड तथा कल्पवृक्ष केँ साधारण वृक्ष कहब उचित नहि।

**अथवा,**

**शीर्षक - कलियुगक प्रभाव।**

**संक्षेपण** - प्रस्तुत पद 'हेमन्त गीत' सँ उद्धृत अछि। वर्षमे छओटा ऋतु होइत छैक। हेमन्तक आगमन शरद ऋतुक पश्चात् होइत अछि। एहि ऋतु मे सभ कँ भोजन भेटैत छैक। बच्चा, वृद्ध, भिक्षुक इत्यादि सभक मोनकँ ई ऋतु मस्त कऽ रहल अछि। हेमन्त ऋतुक स्वागत हो।

**5.** माए-बाप कँ कुहरैत छोड़ि अभिसारिका अपन संकेत-स्थल पर विदा भेलीह।

**6.** **प्रकाश** - इजोत, रोशनी।

**पृथ्वी** - धरती, धरा।

**नदी** - सरिता, तटिनी।

**दुर्गा** - देवी, भगवती।

**दुःख** - व्यथा, क्लेश।

**7.** **विष्णुक उपासक** - वैष्णव।

**दियादनीक बेटा** - जाउत।

**जे पालन करए** - पालनकर्त्ता।

**पित्तीक बेटा** - पितियौत।

**खूब खयनिहार** - खाधुर।

**8.** **हिमालय** - हिम+आलय।

**विद्यालय** - विद्या + आलय।

**निर्दोष** - निः + दोष।

**निर्मल** - निः + मल।

**निष्काम** – नि+ काम।

***

# बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

## वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

**MAITHLI** **मैथिली**

**Set-IV**

## MODEL PAPER, SET – IV

**समय : 1 घंण्टा + 37 1/2 मिनट**

**पूर्णांक : 50**

**परीक्षार्थी क लेल निर्देश : देखू Model Paper, Set - I क निर्देश।**

**1.** निम्नलिखितमे कोनो एक विषय पर निबन्ध लिखू। 1 x 10 = 10

(क) अहाँक प्रिय पोथी (ख) सैनिक शिक्षा

(ग) ग्रामोत्थान।

**2.** नटराज शीर्षक कविताक सारांश लिखू। 7 1/2

**अथवा,** अधिकार शीर्षक कविताक समीक्षा करू।

**3.** 'रमजानी' कथावस्तु लिखू। 7 1/2

**अथवा,** 'बाबाक संस्कार' शीर्षक कथाक सारांश लिखू।

**4. अर्थ लिखू:** 5

''सुयश कतए नहि सो, जो रे राक्षस अधम ताँ /'' धिक-धिक वनिता-चोर,

सूर्पनखा गति हम

करब।''

**अथवा,** ''अगराही लगौ बरु बज्र खसौ / एहन जाति पर-वरू धसना धसौ /

भूकम्प हौक बरू फटौ धतरी / माँ मिथिला रहिएके की करती?''

**5. निम्नलिखित अवतरणक संक्षेपण करू:**

5

नीक वस्तु आनिकेँ द देतैक लोककेँ अपना लेल की रहतैक? मङ्ग.नी आखिर मङ्ग. निए होइत

छैक।

**6. पर्यायवाची शब्द लिखू:**

5

कमल, पत्नी, सूर्य, जल, धरती।

**7. संधिक भेद लिखू।** 5

**8. निम्नलिखित लोकोक्तिकेँ वाक्यमे प्रयोग करू:**

5

बाड़िक पटुआ तीत

भाग्यवान केर भूत कमाय

गोर माउग गौरवे आन्हरि

अघायल बककेँ पोठी तीत

चलय न आबए तऽ आंगन टेढ़।

***

## उत्तर (ANSWERS)

**1. (क) अहाँक प्रिय पोथी** - एखन धरि हम जाहि थोड़ पुस्तक सभक सामान्य अध्ययन कएल अछि, ताहिमे कालिदासक 'शकुन्तला', कविकोकिल विद्यापतिक पदावली, शेक्सपियर 'हैमलेट', महात्मा गाँधीक 'आत्मकथा' ओ तुलसीदासक 'रामचरितमानस' विशेषरूप सँ उल्लेखनीय अछि। ई सब पोथी नीक तँ अछिए संगहि पाठकक लेल अत्यन्त प्रभावोत्पादक। यद्यपि मैथिल भेलाक कारणें महाकवि विद्यापतिक पदावली सँ प्रभावित होएब स्वाभाविक अछि, परंच बाल्याकालहि सँ 'मानस' क निर्बाध पाठक भेलाक कारणें रामचरित हमर मन-प्राणक रग-रग मे रचि-बसि गेल अछि। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीक जीवन पर जाहि पोथी सभक विशेष प्रभाव पड़ल ओहिमे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करबाक कोटि से 'मानस' क स्थान कोनो पोथी सँ न्यून नहि अछि।

मानसक चौपाई जँ एक दिस निरक्षर चरवाहक मुँह सँ गुनगुनाइत सुनबा से अबैत अछि तँ दोसर दिस पैघ-पैघ विद्वान ओ पण्डित मानसक प्रतिदिन सस्वर पाठ करैत छथि। इएह कारण थिक जे दीन-दलितक पर्णकुटीर सँ लए राजा-महाराजक राजमहल धरि 'मानस' क आदर समान रूप सँ कएल जाइत अछि। भारतक तँ कथे कोन विश्वक गणमान्य विद्वान ओ लेखक एकर श्रेष्ठताकेँ स्वीकार कएलनि अछि। प्रसिद्ध भाषाशास्त्री जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सनक मतानुसार इसाई। धर्मावलम्बी जनता मे 'बाइबिल' क जे स्थान अछि सएह स्थान हिन्दूजगत मे 'मानस' क अछि। इएह

कारण अछि जे आइ चारि सए अधिक वर्षक बादो जनमानसक बीच मानसक एतेक आदर अछि जे एकर प्रचार-प्रसार किछुओ कम नहि भेल अछि।

'मानस' जँ एक दिस वैदिक ऋचा जकाँ ईश्वरीय काव्य अछि तँ दोसर दिस 'गीता' जकाँ धार्मिक उपदेशक। सब धर्मक धर्मग्रन्थ, यथा-'गीता', 'बाइबिल', 'कुरान' ओ' 'गुरु ग्रन्थ साहिब' क सारवस्तु जेना 'मानस' मे एक सूत्रमे गांथि देल गेल अछि। भारतीय संस्कृतिक मेरुदंड रूप मे 'मानस' केर मान्यता स्थापित भए चुकल अछि। ई एही कारणेँ-

**''हरि अनन्त हरिकथा अनन्ता''**

जकाँ अत्यन्त विशिष्ट गुण सँ युक्त अछि। 'मानस' महाकाव्यक रूप मे प्रतिष्ठित होइतहुँ कथाकाव्य जकाँ अत्यन्त रोचक एवं मनोरम अछि। एहिमे रामकथाक सांगोपांग वर्णन भेल अछि। श्रीराम केँ जाहि आदर्श महापुरुष रूप मे तुलसीदास चित्रित कएलन्हि अछि से श्रीराम तऽ मर्यादा पुरुषोत्तम छथिहे संगहि सामान्य लोकक लेल एकता आदर्श बनि गेलाह अछि। संगहि संग श्रीराम जकाँ अन्यान्यो पात्रक भूमिकाक विश्लेषण जनसाधारणक लेल अुकरणीय बनि गेल अछि एवं नाम ओ रूपक अनुकूल समाजमे आदर्श रूप मे श्रीरामे जकाँ प्रतिष्ठित भए गेलाह अछि। यथा-भरत ओ लक्ष्मण-सदृश भ्राता, सीता सन पत्नी कौशल्या सन माए, सुग्रीव सन मित्र एवं हनुमान सन सेवक भारतक गौरवमय परम्पराक द्योतक बनि गेल अछि।

यदि 'मानस' क उपर्युक्त पात्रकेँ आदर्श मानि वर्तमानकालहु मे समाज मे एकर अनुकरण कएल जाए तऽ चरित्रगठनक संगहि समस्त विश्व स्तर पर मनुष्यताक

उत्थान मे नव आशाक संचार भए सकैत अछि एवं दोस्तोवस्कीक ई कथन–''मनुष्य बर्बर पशुओ सँ अधिक बर्बर अछि'' एहि वाक्यसँ व्याप्त निराशाक अंधकार मानव समाज सँ समूल नष्ट भऽ संगहि Alexander Pope केर निम्न कथन–''Bewrae of all but most beware of mankind '' सेहो निराधार भए जाएत।

'मानस' कँ काव्य ओ दर्शन केर सेतुबन्ध कहल जा सकैत अछि। एहि रचना मे तुलसीदास दुहू वस्तुक मणिकांचन–योग जकाँ समन्वय स्थापित कएलनि अछि। काव्यक सब गुण सँ युक्त ओ षट्दर्शनक टीका कहल जा सकैत अछि 'मानस'। एहिमे तत्कालीन युग ओ समाजे टाक चित्रण नहि भेल अछि, तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक ओ राजनीतिक परिवेशक चित्रांकनेटा नहि भेल अछि, वर्तमान संदर्भहु मे एकर अध्ययनक सार्थकता आओर अधिक बढ़ि गेल अछि।

श्रीराम परिवार सँ प्रेरणा लए आजुक सामान्य परिवारक कोन कथा विश्वपरिवार धरिके सर्वतोमुखी विकासक परिकल्पना कएल जा सकैत अछि। आइ विज्ञान भौतिकवादी विचारधारा सँ प्रभावित भए लोकमानस कँ सुविधाभोगी बनौने जए रहल अछि। ई सुविधा की सब कँ भेटि रहल छैक। समाजक, राष्ट्रक ओ विश्वक एक सीमित वर्ग समाज, राष्ट्र ओ विश्वक शोषणमे आकंठ डूबल अछि। शोषक वर्ग दलित ओ पीड़ित कँ शोषित करबा मे रावणो सँ विशेष क्रूर बनल जा रहल अछि। एकर कारण अछि आध्यात्मिकता सँ विमुखता। 'मानस' मे आध्यात्मिक आधारशिला पर ज्ञान–विज्ञानक भवन–निर्माणक प्रेरणा देल गेल अछि। आइ वैज्ञानिक उपलब्धि पर जँ दशमुख रावणेटा आधिपत्य स्थापित भऽ जाए तँ ओ सज्जन तथा जनसाधारण

शोषण करबे करत, सर्वस्वहरण, अपहरण, शीलहरण ओ सात्विक जीवन-यापन मे विघ्न उपस्थित करबे करत। एहने दुराचार ओ निरंकुश शासक पर अंकुश देबाक लेल 'मानस' मे श्रीरामकेँ आदर्श रूप मे चित्रित कएल गेल अछि। श्रीराम स्वयं कष्ट सहन करैछ, वनवासक भोग (यातना) सहैछ, पितृशोक सँ आकुल पत्नी-हरण आदि दुस्सह कष्ट भोग करितहुँ राक्षसक संहार कए क्रान्ति स्थापित करैत लोककल्याणकारी राज्यक स्थापना करैछ। आइ त्रेताक रावण जकाँ समाज मे अत्याचारी मानवरूपी राक्षस रावणसँ त्राण दिएबाक हेतु श्रीराम सन आदर्श चरित जननायकक प्रयोजन अछि जे 'मानस' क नायक श्रीरामे जकाँ लोककल्याणकारी राज्यक स्थापना कए सकथि।

एही सभ समस्याक निदानस्वरूप 'मानस' क निरन्तर पाठ सँ प्राप्त निष्ठाक कारणेँ ई हमरे नहि, जनसामान्यक प्रिय पोथी बनि गेल अछि।

**(ख) सैनिक शिक्षा** - आधुनिक वैज्ञानिक युगमे सैनिक शिक्षा परमावश्यक अछि। कारण वैज्ञानिक परसारसँ सैनिकक कार्य बहुत जटिल भऽ गेल अछि। नव-नव वैज्ञानिक हथियारक ज्ञान हुनकालोकनिकेँ रहब परमावश्यक अछि, कारण कोन तरहक हथियारसँ कखन कुम्हरसँ प्रहार होएत ताहिसँ देशक सुरक्षाक हेतु हुनकालोकनिकेँ प्रशिक्षित कए नव अत्याधुनिक हथिआरसेँ लैस राखए पड़ैत छैक।

आधुनिक सैनिक शिक्षाक स्वरूप प्राचीन सैनिक शिक्षासँ भिन्न तरहक अछि। प्राचीन समयमे स्थल सेनाक मात्र आवश्यकता छल मुदा आइ-काल्हि वायु सेना आ जलसेनाक महत्त्व बढि गेल अछि। संगठित आ सुव्यवस्थित सेना राखय लेल प्रचुर धनक आवश्यकता पड़ैत छैक; धनक अभावमे प्रचुर सेना राखब असम्भव कार्य

अछि। एहि स्थितिमे स्थायी स्थल सेनाक संख्या किछु कम कए अस्थायी रूपें किछु सैनिक तैआर कए समय पर कार्य लेब उचित होएत।

अस्थायी सैनिक होएत सहायक सैनिक। हुनकर कएकटा श्रेणी अछि, जेना–एन. सी.सी. (नेशनल कैडेट कोड़), ए. सी. सी. (ऑक्जिलियरी कैडेट कोड़), एन. एफ. सी. (नेशनल फीटनेस कोड़) आ बी. एस. एस. (भारत सेवक समाज)। एहि तरहक शिक्षा अगर साधारण जनताकेँ देल जाएत तऽ आर्थिक समस्या समाधान भऽ सकत। एहि तरहक सैनिक–शिक्षा विद्यालय तथा महाविद्यालयमे छात्र केँ देब अनिवार्य कऽ देबाक चाही। शास्त्रक संग शस्त्रक शिक्षा देलासँ हुनकालोकनिमे शारीरिक, मानसिक आ नैतिक शिक्षाक विकास एक संग हेतनि।

सैनिक शिक्षा देबाक हेतु सैनिक विद्यालय आ महाविद्यालय खुजल अछि। जाहिठाम पूर्ण सैनिक बननिहारकेँ शिक्षा देल जाइत अछि। जाहि ठामसँ शिक्षा ग्रहण कऽ स्थायी रूपेँ स्थल, जल आ वायुसेनामे भर्ती होइत छथि। विद्यालय अथवा महाविद्यालयमे विशिष्ट विज्ञ सैनिक शिक्षा प्राप्त व्यक्तिक देख–रेखमे शिक्षा जाइत अछि। ओहि सब छात्रकेँ वार्षिक सैनिकोत्सवमे सम्मिलित होबय पड़ैत छनि, जाहि ठाम सफलता भेटला पर प्रमाण पत्र देल जाइत अछि।

सैनिक शिक्षा बड़ लाभप्रद होइत अछि। एहिसँ विद्यार्थी अनुशासित, स्फूर्तिपूर्ण, अविलासी, उत्साही, देशप्रेमी ओ कर्मठ होइत छथि। सैनिक लेल कर्त्तव्यक भावना सबसेँ ऊपर होइत अछि। एहि लेल ओ अपन कर्त्तव्य पथ पर निर्भय भऽ अपन तन–मनसँ कार्य करैत छथि। छात्रकेँ सैनिक शिक्षा भेटलासँ संख्या बढ़ि जाएत।

शस्त्रविद्या शास्त्र विद्याक पूरक बनि समाज आ देशक हेतु बड़ कल्याणकारी सिद्ध होएत। देश-प्रेम, देश-सेवा, आत्म-बलिदान आ चरित्रक निर्माणक सुअवसर छात्र जीवनकेँ विकासमे महान अवसर प्रदान करैत अछि।

अत: ई स्पष्ट अछि जे सैनिक शिक्षा देश आ राष्ट्रक लेल महान् कल्याणकारी अछि।

**2.** महाकवि विद्यापति 'नटराज' शीर्षक कवितामे भगवती पार्वती ओ भूतनाथ महादेवक वार्तालापक माध्यमसँ चमत्कारक अद्‌भुत घटनाक सम्भावनाक उल्लेख कयलनि अछि। गौरी शिवसँ नाच करबाक आग्रह कएलथिन, मुदा शिव अपन चारि गोट-चिन्तासँ अवगत करबैत छथि। माथपरक चन्द्रमासँ अमृत चूबि बाघम्बर पर पड़त तऽ ओ शिवक बसहाकेँ भक्षण कऽ लेत। गरदनिक सर्प चारू कात छिड़िआ जाएत तऽ कार्तिकेयक पोसल मयूर ओकरा खा लेत। गंगा पृथ्वी केँ जलप्लावित कऽ देतीह। गरदनिक मुण्डमाल टुटिके खसत तऽ मसानी जागि जाएत तखन गौरी नाच नहि देखि सकतीह, मुदा गौरीक मानक रक्षार्थ शिव-नाच देखओलनि।

**अथवा,**

कविवर आरसी प्रसाद सिंह 'अधिकार' शीर्षक कवितामे मातृभाषा मैथिलीक महत्त्वक विवेचन करैत भाषाकेँ उचित सम्मान देबाक हेतु संदेश देलनि अछि। जनकक भूमि ओ भाषाक लेल हमरालोकनि कटिबद्ध छी। एतय कोशी, कमला, गंडक इत्यादिक पावन धारा बहैत अछि। केओ कंठ पर बैसिकऽ हमरालोकनिक वाणी अवरुद्ध नहि कऽ सकैत अछि।

केओ हमरा पर अत्याचार नहि कऽ सकैँत छथि। अपन शक्तिक बल पर हम समस्त अधिकार प्राप्त कऽ लेब। हमर मातृभाषाक उद्धार होयबाक चाही।

**3.** ललितक रमजानी कथामे मध्य एवं निम्नवर्गीय चेतनाक संग जीवनक आर्थिक संघर्षक सफल चित्रण भेल अछि। रमजानीमे एक निर्धन व्यक्तिक चरित्र-चित्रण भेल अछि। ओ रिक्शा चलबैत अछि, मुदा ताड़ीक नशा करैत अछि। बीमार पड़ता पर ओकर घरक निर्धन व्यक्तिक चरित्र -चित्रण भेल अछि। ओ रिक्शा चलबैत अछि मुदा ताड़ीक नशा करैत अछि। बीमार पड़ता पर ओकर घरक भोजन बन्द भऽ जाइत अछि। ओकरा खबरि लगैत छैक जे टैनिसक मैदानमे घोडी लिद्दी कऽ देलकैक ताहि लेल ओकरा बान्हि रहल छैक। रमजानी क्रोधसँ बेटाकेँ मारए लगैत अछि। पत्नीक विलाप सुनि रमजानीकेँ दु:ख होइत छैक। ओ हुस्नाकेँ कहियो सुख नहि दऽ सकल। पत्नीक ओ ताड़ीमे पाइ नहि व्यय करबाक तथा मोस्ताककेँ पढ़एबाक निर्णय लैत अछि।

**अथवा**

'बाबाक संस्कार' मैथिलीक हास्य-व्यंग्य सम्राट हरिमोहन झाक कथा अछि। पुत्रक लेल भगीरथ बाबा बहुत कबुला कयलनि। हुनका सात पुत्र भेलन्हि। वृद्ध भेला पर सातो बेटा हुनक मरणक कामना करए। हुनका बाहरक घरमे सुतबाक लेल देल गेलनि।

भगीरथ बाबाकेँ सद्गति शीघ्र भऽ जाइन एहि बात पर सातो बेटा एकमत रहिथ। बूढ़ा पूर्ण स्वस्थ छलाह। बेटा सभ कहनि-ई कहिओ नहि मरताह,

हमरालोकनिक अंकुरी खाकऽ मरताह। हुनक पाचनशक्तिक तीव्र आलोचना होइत छल। एक दिन बाबा कछनी काछिकेँ पड़ि रहलाह। सातो कुपुत्र गंगालाभ करएबाक लेल लऽ जाए हुबा-डुबाकेँ प्राण लऽ लेलकनि। पिताक दु:खद मृत्यु पर सातो भाइ खूब ठाठ-बाठसँ श्राद्ध कलयनि।

वृद्ध पिताक प्रतिक संतानक अनुचित कर्मकेँ प्रो. झा एहि कथामे देखौलनि अछि।

**4.** प्रस्तुत पद्यांश कविवर चन्दा झा रचित 'मिथिलाभाषा रामायण' क लंकाकाण्डसँ लेल गेल अछि। दोसरक स्त्रीकेँ चोरोनिहार अत्यन्त पातकी होइत अछि। कुकर्मक तेल तोरा धिक्कार रावण। तोरो शूर्पनखा सन गति करबह।

**अथवा,**

प्रस्तुत पद्यांश कविवर यात्रीक 'विलाप' शोर्ष क कवितासँ उद्धृत अछि। 'यात्री' जी मैथिल-समाजमे विधवा स्त्रीक दुर्दशाक चित्रण कयलनि अछि जे समाजकेँ शाप दैत कहैत अछि जे ई जाति नष्ट भऽ जाए; भूकम्पमे धराशायी भऽ जाए। मिथिला एतेक अत्याचारी संतानक कारणें रहिये कँ की करतीह?

**5.** **शीर्षक**- मंगनीक वस्तु।

**संक्षेपण**- कोनो वस्तुकेँ मंगनी के नहि अनबाक थिक।

**6.** कमल - सरसिज सरोज। पत्नी - भार्या, दारा।

सूर्य – भानु, दिनकर। जल – पानि, वारि।

धरती – वसुधा, वसुन्धरा।

7. संधिक तीन भेद होइत अछि स्वर संधि व्यंजन संधि आ विसर्ग संधि।

8. **बाड़िक पटुआ तीत**- ओ पटना छोड़ि वाराणसी पढ़बाक लेल गेलाह। एहने ठाम कहैत छैक जे बाड़ीक पटुआ तीत।

**भाग्यवान केर भूत कमाय**- पलटू कँ सासुरक धन हाथ लगलनि। ठीके कहैत छैक जे भाग्यवान करे भूत कमाए।

**गोर माउग गौरवे आन्हरि**- धनिक ओ सुन्दर गीता अइंठ कऽ चलैत अछि। एहने ठाम कहैत छैक
जे गोर माउग गौरवे आन्हरि।

**अघायल बककेँ पोठी दीत**- सेठ जी मधुर नहि खयलनि। ठीके कहल जाएत छैक जे अघायल
बककेँ पोठी तीत।

**चलय न आबए तऽ आंगन टेढ़**- पदक अर्थ नहि लगलनि तँ कहलनि जे पदे अशुद्ध छैक, ठीके
कहल जाएत छैक जे चलय ने आबए तऽ आंगन डेढ़।

***

# बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

## वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

**MAITHLI** **मैथिली**

**Set-V**

**MODEL PAPER,**
**SET – V**

**समय : 1 घंण्टा + 37 $^{1/2}$ मिनट** **पूर्णांक : 50**

**परीक्षार्थी क लेल निर्देश : देखू Model Paper, Set - I क निर्देश।**

**1.** निम्नलिखित मे कोनो एक विषय पर निबन्ध लिखू: 1 x 10 = 10

(क) स्वावलम्बन (ख) महाविद्यालयक प्रथम दिन

(ग) मातृभाषाक महत्त्व

**2.** 'राम वन्दनाक' भाव व्यक्त करू। 7 $^{1/2}$

**अथवा,** 'मुसरी झा' क कथा लिखू

**3.** 'मैथिलीक आवश्यकता' शीर्षक निबन्धक विषयमे की जनैत छी? 7 $^{1/2}$

**अथवा,** 'हथटुट्टा कुर्सी' एकांकीसँ परिचय कराउ।

**4. अर्थ लिखू:** 5

''विष्ठी लए दँतखिष्ठी जकरा

जोड़ा बरद द्वार पर तकरा

घरक निकलुआ राजनीति

सागर मे डुबकान दैत अछि।''

**अथवा,**

''ई बाल वृद्ध भिखारि

सभकेँ कयलक अछि मस्त सारि

दुर्दान्त भूख केरि भेल अनत

स्वागत मिथिला ऋतुपति हेमन्त।''

**5. संक्षेपण करुः** 5

ओता तऽ सातो भाय कँ सात रंगक विचार रहिन्ह, मुदा पिताकँ शीघ्र भऽ जाइन्ह, एहि बात मे सभ एकमत रहिथ।

**6.** संज्ञाक भेद लिखू। 5

**7.** संधि ओ समासमे अन्तर स्पष्ट करू। 5

**8. पर्यायवाची शब्द लिखू।** 5

माछ, दु:ख, आगि, हाथ, पानि।

***

## उत्तर (ANSWERS)

**1. (क) स्वावलम्बन** -मनुष्य मात्र अपन भाग्यक विधाता अपने अछि मुदा प्रश्न ई अछि जे कोन मनुष्य एहि तरहक अछि जे अपन भागयक निर्माण स्वयं करैत अछि। तखन आहाँकँ मानए पड़त जे रहि श्रेणीक लोक अपन पएरपर ठाढ़ रहि अपने भरोसे चलैत अछि। अपन गुणक विकासक संग बढ़ैत अछि ।आगू बढ़ि अपन जीवनपथ पर बाधा-विघ्नकँ दूर हटबैत उन्नतिके शिखर पर बढ़ैत अपन पैर पर अवलम्बित रहनिहार होइत छथि। स्वावलम्बी मनुष्यक उन्नतिक सोपान मानल गेल अछि।

स्वावलम्बनक महत्त्व मानव जीवनमे बड़ पैघ मानल गेल अछि। स्वावलम्बी अपन गुण, ज्ञान, शक्ति एवं स्थितिक अनुसार सब कार्य करैत छथि। एहिसँ हुनक साहसक बढ़ैत छनि, संग-संग गुणक विकास सेहो होइत रहैत छनि। एहन व्यक्तिकेँ पाबि समाज उन्नतिक दिशि अग्रसर होइत अछि। परावलम्बी भेल मनुष्यक जीवन शक्तिहीन, शिथिल आ असहाय बनि जाइछ। हुनका लोक हेय दृष्टिसँ देखैत छनि स्वावलम्बीकेँ देखि समाज आत्मगौरवक अनुभव करैत अछि।

मनुष्यकेँ स्वावलम्बी होयब परमावश्यक अछि। बढ़ियाँ सँ बढ़ियाँ नियम, कानून आ उत्तम सँ-उत्तम संस्था मनुष्यक उन्नतिक लेल सहायक नहि भऽ सकैछ। ओहि सँ कार्य मात्र करबाक स्वतंत्रता भेटैत छैक, मुदा सुस्तकेँ उद्योगी, फिजुलखर्चीकेँ मितव्ययी आ मद्यपान कएनिहारकेँ संयमी बनएबाक शक्ति छैक स्वावलम्बीक अभ्यास आ आचरणमे। वास्तवमे स्वावलम्बन मानव-जीवनक अमृतक समान अछि। जे स्वावलम्बी नहि बनैत अछि ओ देश आ समाजक लेल बोझ रहैत अछि। ओ सतत परमुखापेक्षी बनल रहैत अछि। अपना लेल अपने किछु ने कऽ सकैत अछि, ने सोचि सकैत अछि।

स्वावलम्बनक उदाहरण संसारमे अनेकानेक भरल परल अछि। जकरा अनुकरण मात्र कएलासँ व्यक्ति अपनहुँ आगू बढ़ल आ समाज-देशकेँ सेहो प्रगतिक पथ पर आगू बढ़ौलक। स्वावलम्बी पुरुष छलाह इब्राहिम लिंकन, हिटलर, मुसोलिनी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, राममोहन राय, स्वामी विवेकानन्द, कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास, शंकराचार्य इत्यादि कतोक उदाहरण गनाओल जाए।

जे कोनो व्यक्ति संसारमे आगू बढ़ल सब स्वावलम्बनेक बल पर, अतः हमरालोकनि स्वावलम्बी बनी तखनहि हमर समाज आ देशक कल्याण होएत।

**(ख) महाविद्यालयक प्रथम दिन** - कहल जाइत अछि जे महाविद्यालयक बिना ज्ञान नहि- (No knowledge without college) । जखन छात्र प्रवेशिका परीक्षा मे सम्मिलित होइत अछि तखनहि सँ महाविद्यालय मे प्रवेश करबाक मधुर कल्पना करए लगैत अछि। शहरी छात्र कँ तऽ वातावरणे सँ कॉलेजक विषय मे बहुत किछु सुनल रहैत छन्हि परंच सदूर देहाती क्षेत्रक स्कूलक छात्रक हेतु महाविद्यालय मे प्रवेश करबाक गुदगुदी विशेष लगैत छैक। सभ छात्रक ई आन्तरिक अभिलाषा रहैत छैक जे उत्तम अंक सँ प्रवेशिका परीक्षा पास करी आ पैघ शहरक पैघ कॉलेज मे प्रवेश करी।

हम एकटा देहाती उच्च विद्यालय सँ प्रवेशिका परीक्षा पास कए नामांकनक लेल दरभंगा गेलहुँ। ओहि समय मे प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण छात्रक नामांकन सी. एम. कॉलेज मे स्वतः भऽ जाइत छलैक। हम टेकटार स्टेशन सँ टिकट कटाए ट्रेन सँ दरभंगा पहुँचलहुँ। एहि सँ पूर्व पहिल खेप जिला स्कूल, दरभंगा मे मैट्रिकक परीक्षा देबाक लेल आएल रही। दरभंगा टीसन पर उतरि पुछारि करैत पहिनेहि सी. एम. कॉलेज, दरभंगाक फाटक पर पहुँचलहुँ। भीतर प्रवेश करतहिँ हम मकान ओ अंगनइ देखि चकित भए गेलहुँ। नामांकन काउन्टर पर विशेष भीड़भाड़ नहि रहैक। नामांकन कराए एकटा छात्र कँ पुछलियनि- 'अहाँ कोन कक्षाक छात्र छी?' उत्तर भेटल 'फर्स्ट इयर।' हुनका सँ वर्ग प्रारंभक तिथि पुछलियनि तँ कहलन्हि जे आएइ सँ नोटिस भेल छैक।

कला-संकायक प्रथम वर्षक वर्ग ओ कोठलीक पुछारि कए मैथिली रचना (मातृभाषा) वर्ग मे प्रवेश कएलहुँ। पहिने तऽ छात्रलोकनि भेड़िया-धसान जकाँ प्रवेश कएलनि, मुदा शिक्षकक कक्ष

मे प्रवेश करतिहिँ वातावरण शान्त होबए लागल। शिक्षक क्रमानुसार उपस्थिति-पुस्तिका पर सभक हाजिरी बनौलनि। पुनः अध्यापन प्रारंभ भेल। पोथी-कॉपी तऽ किछु रहए नहि तथापि शिक्षककेँ मूक-द्रष्टा बनि सुनैत रहलहुँ। कविताक पाँती सभ केँ खोंइचा छोड़ाए केँ अर्थ कहबाक शैली ओ शिक्षकक अथाह ज्ञान सँ हम मंत्र-मुग्ध भए गेलहुँ। दोसर घंटी अंगरेजी रहए। ओहि समय मे अन्तर-स्नातक मे अंगरेजी अनिवार्य विषय रहए। शिक्षक ज्ञानसँ हम मंत्र-मुग्ध भए गेलहुँ।

पुस्तकालय प्रकोष्ठ दिस क्रमशः बढ़ैत गेलहुँ। पुस्तकालय-भवन मे प्रवेश करितहिँ हम क्षुब्ध भए गेलहुँ। पोथीक कोन कथा, एतेक आलमारिओ हम एकठाम पंक्तिबद्ध रूप मे सजाओल पहिले पहिल देखलहुँ। वास्तवमेः महाविद्यालयक पुस्तकालय हमर मस्तिष्क पर अमिट छाप जकाँ एखन धरि बनल अछि।

पुस्तकालय सँ बाहर भऽ प्रधानाचार्यक कक्ष दिश हुलकी मारलहुँ। ओतए हुनका संग पाँच-सातटा शिक्षक केँ कोट-पैंट लगौने किछु गप्प करैत देखलहुँ। प्रधानाचार्य खादी वस्त्र पहिरने चकचक करैत रहथि। ओतए सँ छात्रक क्रीड़ा-भवन दिस गेलहुँ। किछु वरिष्ठ छात्रगण केँ ओतए खेलाइत देखलहुँ। ओतए सँ शिक्षक-प्रकोष्ठ दिस जाए क्रमशः प्रत्येक विभागक प्रवेश-द्वार पर विभाग सभक नाम एकटा छोट-छीन टीनक टुकड़ी पर लिखल देखलियैक।

एवं क्रमे महाविद्यालयक प्रथम दिन हमरा लेल पैघ उपलब्धिक मुहूर्त्त छल। पुनः टीशन आबि टेन पकड़ि गामक लोकक संग सात बजे गाम पहुँचि गेलहुँ। भोजनोपरान्त बाबूजी केँ महाविद्यालयक सभ वृत्तान्त क्रमबद्ध रूपेँ सुना देलियन्हि।

**2.** गोविन्ददास मैथिलीक सभसँ विन्यासी कवि छलाह। विद्यापति केँ काव्यगुरु मानि ओ रचना कयलनि अछि। हुनक रचनाक अन्तरमे अछि भक्ति तथा आवरणमे अछि शृंगार। राम वन्दनामे

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामक उदात्त गुण ओ अद्‌भुत महिमाक वर्णन भेल अछि। श्रीराम रघुकुलक आनन्द एवं जनकतनयाकस्नेहक आधार छथि। देवता, मनुष्य, वानर, नभचर आ निशाचर हुनक गुणगान करैत छथि। हुनक वर्ण श्याम तथा आँखि नीलकमल सन छन्हि। बाम हाथमे धनुष तथा दहिना हाथमे वाण सुशोभित छन्हि। केसरी नन्दन हनुमान भक्तिक अपार श्रद्धा मे डूबि हुनक वन्दना करैत छथि। हुनक भ्राता सभ हुनक आगाँ नतमस्तक रहैत अछि।

**अथवा,**

कविवर तंत्रनाथ झाक 'मुसरी झा' शीर्षक कविता मे पाखण्ड पर प्रहार अछि। ई कथा-काव्य थिक। मुसरी झा गरीब आ सदाचारी लोक छलाह। एक दिन माघ मास थर-थर काँपैत ओ श्रीखंड घसि रहल छलाह कि एकटा उद्दंड छौंड़ा हुनक जलपात्रक जल किछु हेरा देलक।

अेतए मुरारी झा लग कुकुर सूतल छल। कुकुर पर ओ किछु पानि छिटलक तथा कुकुर धड़फड़ाकऽ उठल तऽ ओ पानि मुसरी झा पर पड़लनि। मुसरी झा सिमरिया स्नानक लेल विदा भेलाह। बाटमे एकटा मरड़ हुनक स्वागत कएलक। ओ चूड़ामे छाल्ही दए मुसरी झा केँ खुआ देलनि, जकरा पिलिया चटने छल। मुसरी अपनाकेँ चाण्डाल बूझि प्रतिकारक उपाय ताकए लगलाह।

**3.** प्रस्तुत निबन्धक लेखक छथि म. म. मुरलीधर झा। मैथिली मातृभाषा छैक। प्राचीनकालमे समस्त भारतवर्षक मातृभाषा मैथिली छल। कालान्तर मे नव-नव भाषाक विकास भेल। मिथिलामे संस्कृत भाषा बहुत दिन धरि जोर पकड़ने छल, तेँ मिथिला भाषा बहुत दिन धरि उपेक्षित रहल। समय बदलि गेल अछि। समस्त विषयक ज्ञान यदि मातृभाषा द्वारा देल जाइ तऽ छात्रकेँ सुविधा हेतैक। मैथिली मायक भाषा अछि जे जन्मे सँ हमर संग अछि। आन भाषा मे शुद्धताक चिन्ता रहैत छैक।

एक समयमे अनेक बात पर ध्यान देला सँ लोकक समस्या बढ़ि जाइत छैक। अन्य भाषामे हृदयगत बातकेँ स्पष्ट करब कठिन अछि। मिथिलावासी एकर प्रचार-प्रसार करथि।

**अथवा,**

'हथटुट्टा कुर्सी' एकांकी स्व. सुधांशु 'शेखर' चौधरीक लोकप्रिय ओ उत्कृष्ट एकांकी थिक। सामाजिक जीवनक समस्या ओ परिवारक टुटैत श्रृंखला क चित्रण रचनाकारक मुख्य विषय अछि। एकटा डिप्टी कलक्टर अपन झूठ शानक कारणे गाम पर नहि अबैत छथि। हाकिम पुत्रक स्वागत करबाक लेल नेनमणि झा, बाप ओ कंटिर सदैव अपस्याँत छथि। ओ बोच बाबूसँ कुर्सी मंगनी करबैत छथि, मुदा ओ हथटुट्टा कुर्सी द दैत छथिन। नथुनी बाबूसँ चादरि मंगाओल जाइत अछि। नेनमणि झा अपन दरिद्रता पर लज्जित होइत छथि। डाकपिउन तखने आबि पत्र हाथमे दैत छथिन जे हम सपरिवार कश्मीर जा रहल छी। एहू बेर नहि आबि सकब। नेनमणि झाक मोनमे घोर निराशा भऽ जाइत छन्हि।

**4.** प्रस्तुत पद्यांश कविवर मैथिलीक सुप्रसिद्ध हास्य रसक कवि चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' क युगचक्र शीर्षक कवितासँ उद्धृत अछि। जाहि व्यक्तिकेँ अपन देह पर लज्जा निवारक लेल वस्त्र नहि छलैक ओ सदिखन दोसरसँ मंगैत छलाह तथा आइ राजनीतिमे प्रवेश कऽ समृद्ध भऽ गेल छथि।

**अथवा,**

प्रस्तुत पद्य कांचीनाथ झा 'किरण' क हेमन्त गीत सँ उद्धृत अछि। कवि कहैत छथि जे सामान्य लोकसँ लऽ कऽ राजा धरि सभहक लेल हेमन्त ऋतु वरदान अछि। हेमन्तमे बाध-बनमे धानक फसिल पाकिकेँ लहराइत अछि। हेमन्त ऋतु मे सभक लेल भोजनक व्यवस्था भऽ जाइत छैक।

**5.** **शीर्षक**- कलियुगी संतान।

बाबा जल्दी मरथु एहि पर सभ भाइ एकमत छल।

**6.** संज्ञाक पाँच भेद अछि-

(i) जातिवाचक, (ii) व्यक्तिावचक, (iii) भाववाचक,

(iv) समूहवाचक एवं (v) द्रव्यवाचक।

**7.** वर्णक मेल कँ सन्धि कहब, जेना-हिम + आलय = हिमालय।

**पदक** मेल कँ समास कहब, जेना-दालि-भात।

**8.** **माछ** - मीन, मत्स्य।

**दुःख** - कष्ट, व्यथा।

**आगि** - अग्नि, पावक।

**हाथ** - कर, पाणि।

**पानि** - जल, वारि।

***